काव्य के प्रयोजन

काव्य के प्रयोजन का अर्थ है काव्य अथवा साहित्य का लक्ष्य या प्रमुख उद्देश्य क्या है। कोई साहित्यकार जब कोई रचना करता है तो उसके सामने कोई ना कोई उद्देश्य अवश्य होता है। साहित्य के आचार्यों ने काव्य भिन्न भिन्न प्रयोजन माने हैं उनमें कुछ प्रेरणा रूप आंतरिक है और कुछ प्रयोजन रूप बाह्य है। पीछे की ओर देखने से प्रयोजन प्रेरणा का रूप धारण करते हैं। भविष्य में स्थित प्रेरणा प्रयोजन बनती है। कुछ का संबंध साहित्य स्रष्टा से है और कुछ का आस्वादक से हैं किंतु बहुत अंश में भक्ति और स्रष्टा के दृष्टिकोण मिल जाते हैं।

आचार्य मम्मट ने तो 'आनंद' को ही मूल प्रयोजन माना है क्योंकि यह रसास्वाद का पर्याय है तथा भामह काव्य से कला को भिन्न मानते हैं और काव्य का प्रयोजन बताते हैं कि 'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ये चारों पुरुषार्थ काव्य रचना के प्रयोजन है साथ ही कलाओं में कुशलता तथा कीर्ति और प्रीति' भी काव्य के कारण उन्होने स्वीकार किए है।

आचार्य वामन काव्य के दो ही प्रयोजन मानते हैं 'प्रीति और कीर्ति' जो मरण के पश्चात भी रहती हैं।

काव्यप्रकाश में जो प्रयोजन कहे गए हैं वे कुछ विस्तृत है जो इस प्रकार है ...

1) **यशसे : --** यश एक प्रधान प्रेरक शक्ति है। भगवान कृष्ण ने भी निष्काम कर्म की उक्ति को "यशो लभस्व " से पुष्ट किया था। रघुवंशी लोग भी यश के परे न थे। अंग्रेजी में भी कहा गया है "Fame is the last infirmity of noble minds". अर्थात ख्याति बड़े आदमियों की अंतिम कमजोरी है। कालिदास, भवभूति आदि ने काव्य यश के लिए ही लिखा था वैसे यश की कामना प्रत्येक व्यक्ति को होती है भृतहरि के अनुसार कवि का भौतिक शरीर नष्ट हो जाता है किंतु जरा मरण से रहित "यशः शरीर" अमर रहता है।

2) **अर्थकृते : --** काव्य के भौतिक प्रलोभन में सबसे अधिक मोहमयी अर्थ या धन है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में "धावक कवि को श्रीहर्ष से प्रचुर धन मिला था। रीतिकाल के कवि गण प्रायः धन के लिए ही राजाश्रय खोजा करते थे। केशवदास को 21 गांव मिले हुए थे। बिहारी को एक मुहर प्रत्येक दोहे पर मिलती थी। शाहनामा के लेखक' फिरदौसी' को भी एक शेर पर एक अशर्फी देने का वादा किया गया था। किंतु वह उसके मरने के बाद उस समय आई थी जबकि उसका शव जा रहा था। उसकी बेटी ने अशरफिया बादशाह को ही लौटा दी थी। उपन्यासकार स्कॉट ने अपना कर्जा चुकाने के लिए 'वेबली नोवेल्स' लिखे थे किंतु सब कवि धन के लोभ से प्रेरित नहीं होते। गोस्वामी तुलसीदास ने स्वांत सुखाय ही कविता लिखी। कुंभनदास जी ने संतन को कहा सीकरी सो काम कह बादशाह के निमंत्रण को ठुकरा दिया था। किंतु आजकल जीवन की आवश्यकताओं के बढ़ जाने के कारण बेचारे साहित्यिक को सरस्वती और लक्ष्मी के परस्पर वैमनस्य के दुखद अनुभव का सामना करना पड़ता है। टैगोर या टेनीसन की भांति विरले ही कवि अपनी संपन्नता के कारण आर्थिक चिंता से परे होते हैं।

3) **व्यवहारविदे : --** काव्य से लोक - व्यवहार का ज्ञान पाठक को तो होता ही है किंतु स्रष्टा को भी होता है। लिखने से पूर्व वह अपने ज्ञान को निश्चित कर लेता है। सूर और तुलसी के काव्य में उस समय के रीति व्यवहार का ज्ञान होता है यह तो इसके मोटे अर्थ है। काव्य के अध्ययन से व्यवहार की क्षमता भी प्राप्त होती है। इसका कारण यह है कि काव्य के अनुशीलन द्वारा मानव हृदय के रहस्यों का पता चलता है और उसके कारण मनुष्य को वह अनुभव प्राप्त हो जाता है जो वर्षों के पर्यटन से न मिलेगा।

4) **शिवेतरक्षतए : --** (शिवेतर क्षति) शिवेतर क्षति अर्थात 'अनिष्ट निवारण' के अर्थ जो कविता लिखी जाती है उसमें धार्मिक बुद्धि की प्रधानता रहती थी। 'काव्यप्रकाश' में मयूर कवि का उदाहरण दिया है जिन्होंने सूर्य की शतश्लोकतमक स्तुति कर अपने कुष्ठ रोग का निवारण किया था। गोस्वामी तुलसीदास ने भी 'हनुमान बाहुक' इसी उद्देश्य से लिखा था।

By Dr.Sangita Chitrakoti

आज के विज्ञान युग में दैवी शक्तियों में तो विश्वास नहीं किया जाता किंतु वे मानवी शक्तियों को ही संबोधित कर 'अनिष्ट निवारण' करने का उद्योग करते हैं । इस युग में केवल वैयक्तिक ही अनिष्ट निवारण नहीं किया जाता । समाज और देश के कष्ट निवारण के लिए भी काव्य रचे जाते हैं। प्रगतिवाद का कुछ ऐसा ही उद्देश है किंतु उच्च पदाधिकारियों की खुशामद में आर्थिक कष्ट निवारणार्थ कविता लिखने वालों की इस युग में भी कमी नहीं है।

5) सद्य:परिनिवृत्तये **: --** (सद्य: परिनिवृत्ति) सद्य:परनिवृत्तये काव्य का मूल उद्देश्य है। काव्य के आस्वादन से जो रसरूपी आनंद मिलता है वही काव्य का लक्ष्य है तथापि इसमें वह अंतकरण का सुख भी शामिल है। जिससे प्रेरित हो कवि काव्य का निर्माण करता है। कवि सृष्टि का आस्वाद लेता है और सृष्टि का सत्य प्रकट करने के लिए कविता की उत्पत्ति करता है। उसकी कविता उसे आल्हाद प्रदान करती है। और फिर वही आल्हाद सहृदय पाठक में संक्रमित हो जाता है। पाठक तथा श्रोता दोनों ही व्यक्तित्व के बंधनों से मुक्त होकर एक ऐसे भाव भूमि में पहुंच जाते हैं जहां उस विषय की तन्मयता में और किसी वस्तु का ध्यान नहीं रहता। और आत्मा के नैसर्गिक आनंद की झलक मिल जाती है। उस अनुभव में जीवन की सारीकटुताएं, कर्कशताएं, विषमताएं और वेदनाएं एक अलौकिक साम्य को प्राप्त हो जाती हैं। वहां अनेकता में एकता दिखाई देती है। सारे भेद - प्रभेद समाप्त हो जाते है। व्यक्ति में सामान्य के दर्शन होने लगते हैं तभी तो लोग कहते हैं कि यदि विश्व शांति का कोई साधन है तो वह है साहित्य।

6) कांतासम्मतितयोपदेश **: --** (कांतासम्मितयोपदेश)   पत्नी के समान मधुर उपदेश देना भी काव्य का प्रयोजन है। अनेक संतों की रचनाएं इसी कोटि में आती है। पंचतंत्र, हितोपदेश का सृजन इसी उद्देश्य को लेकर हुआ था। शास्त्रों में तीन प्रकार के वचनों का निर्देश है ।

- प्रभुसम्मित : -- प्रभु समित शब्दों में आज्ञा रहती है और अच्छी बुरी बातों का निर्देश होता है। वेद, शास्त्र आदि के उपदेश इसी श्रेणी में आते हैं।
- सहृदयसम्मित : -- सहृदयसम्मित में आज्ञा ना होकर भावना महत्वपूर्ण होती है। इतिहास, पुराण आदि के उपदेश इसी श्रेणी में आते हैं ।
- कांतासम्मित : -- कांतासम्मित में प्रेम उपदेश होता है। । यह सरस होता है वास्तव में काव्य का उपदेश शक्कर में लिपटी हुई कुनैन की गोली के समान होता है। बिहारी के दोहे का प्रभाव राजा जयसिह के सर पर चढ़कर बोला था। यदि बिहारी राजा को उपदेश देते तो वह प्रभावहीन रहता। संभावना यह भी हो जाती थी कि वे राजा के कोप भाजन बन जाते। परंतु बिहारी के निम्नलिखित दोहे ने नवोढ़ा रानी के प्रेम में तल्लीन राजा जयसिंह को राज्कार्यो की ओर उन्मुख कर दिया।
  "नहीं पराग नहीं मधुर मधु नहीं विकास इहि काल,
  अली कली ही सो बंध्यों आगे कौन हवाल । "

7) स्वांत सुखाय **: --**   स्वांत सुखाय का अर्थ है 'जिससे स्वयं को आंनद प्राप्त होता हो'। तुलसी ने अपने काव्य को स्वांत सुखाय कहा है। स्वांत सुखाय से केवल उनका यही अभिप्राय है कि उनको राम गुण गाने से अलौकिक असंतोष मिलता था। वे धन और यश के प्रलोभन से परे थे। वास्तव में सत्काव्य स्वांत सुखाय ही लिखा जाता है किंतु इसका यह अर्थ नहीं वह श्रोताओं के लिए नहीं होता। 'रामचरितमानस' की रचना भले ही तुलसीदास में स्वांत सुखाय के हेतु की थी लेकिन तुलसी का वह स्वांत सुखाय विश्वजन का ही स्वांत सुखाय बन गया है। काव्य को कहने और सुनने में सुख मिलता है लेकिन आत्माभिव्यक्ति का सुख अभिव्यक्त करने से ही प्राप्त होता है।

इस प्रकार अलग अलग विद्वानोने काव्य के भिन्न भिन्न प्रयोजन माने है। उपर्युक्त आचार्यों के मतों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि काव्य की रचना किसी न किसी प्रयोजन को ध्यान में रखकर की जाती है। काव्य के द्वारा कवि जीवन का परिष्कार करता है, समाज कल्याण करता है।